SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना

शिप्रा द्विवेदी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
रश्मि द्विवेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. प्रथम सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
शिप्रा द्विवेदी, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
रश्मि द्विवेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम. फिल. प्रथम सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 02% on 30/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 24 words Plagiarized / 998 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

eerk dkfy;k ds miU;klksa esa ukjh psruk lkjka"k %&/ eerk dkfy;k ukjh thou dh izsj.kk gSaA eerk dkfy;k ds miU;klksa esa ukjh psruk esa cgqpfpZr dFkkdkj eerk dkfy;k dk ys[ku fo"ks'k #i ls Hkkjrh; L=h ds ifjos'k ds prqfnZd ?kwerk gSA eerk dkfy;k L=h dh leL;kvksa dks vius dFkk lkfgR; esa okLrfod /kjkry ij lkgl ds lkFk izLrqr djrh gSA os L=h dh ekufldrk ls ?kqVrs gq, dqN iz'uksa dks mBkrh gS vkSj RkRFkksa dk iksLVekVZe lk djrh gqbZ] mldh ;FkkFkZrk dks pqu pqudj j[krh tkrh gSA eerk dkfy;k ds fgUnh dFkk txr dks cs?kj] ujd nj

शोध सार

ममता कालिया नारी जीवन की प्रेरणा हैं। ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना में बहुचर्चित कथाकार ममता कालिया का लेखन विशेष रुप से भारतीय स्त्री के परिवेश के चतुर्दिक घूमता है। ममता कालिया स्त्री की समस्याओं को अपने कथा साहित्य में वास्तविक धरातल पर साहस के साथ प्रस्तुत करती है। वे स्त्री की मानसिकता से घुटते हुए कुछ प्रश्नों को उठाती है और तत्थों का पोस्टमार्टम सा करती हुई उसकी यथार्थता को चुन चुनकर रखती जाती है।

ममता कालिया के हिन्दी कथा जगत को बेघर, नरक दर नरक, एक पत्नि के नोट्स, लड़कियाँ, प्रेम कहानी, दौड़, दुक्खम सुक्खम्, तथा लगभग 150 रचनाओं में ममता कालिया नें स्त्री विवेचना की है। इनके कथा साहित्य में बहुरंगी आयाम दिखाई देते हैं। महिला कथाकारों में ममता कालिया अपनी अलग और मजबूत पहचान बनाने वाली कथा साहित्य का मूलतः विषय स्त्री चेतना ही रहा है।

मुख्य शब्द

नारी चेतना, प्राकृतिक, महिला सशक्तिकरण, महिला योगदान.

नारी प्रकृति का सुन्दरतम् उपहार है। सृष्टि का आधार नारी ही है। सृष्टि के प्रारम्भ और संचालन में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नर और नारी सृष्टि के दो विशिष्ट सृजन हैं।

आदिकाल से ही हमारा देश नारी पूजक रहा है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।

1 **बेघरः** बेघर ममता कालिया का पहला उपन्यास सन् 1971 में लिखित है। यह उपन्यास आधुनिक समाज में पुरुष की संस्कारबद्ध जड़ता और संदेश दृष्टि का प्रतिपादन करता है। इस उपन्यास में एक पुरुष को केन्द्र में रखकर नारी की समस्याओं पर शुरुआत की है। इस उपन्यास में स्त्री पुरुष के शारीरिक संबन्ध को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय लोगों के मन की संकीर्णता, अंधश्रद्धा, विचारों का पिछड़ापन, आधुनिकता और संस्कारबद्धता के बीच होने वाले तनाव, अधकचरी मानसिकता से युक्त, अर्द्धशिक्षित, शक्की मिजाज वाला सामान्य युवक है। यह एक ऐसा उपन्यास है जिसमें स्त्री अपने घर परिवार के गणित को सही करने के चक्कर में स्वयं अपने आपको बेघर कर लेती है। और पुरुष अपनी प्रेमिका पर शक कर स्वयं भी बेघर हो जाता है और स्त्री को भी बेघर कर देता है।

2 **लड़कियाँः** सन् 1984 में प्रकाशित लघु औपन्यासिक रचना लम्बी कहानी भी कही जा सकती है और लघु उपन्यास भी है। उपन्यास की कथा नायिका और सहनायिका के अवैवाहिक जीवन के अकेलेपन से प्रारम्भ हुई उनके असुरक्षित जीवन की विभिन्न चेतनाओं के विस्तार देते हुए निर्णयात्मक मोड़ पर समाप्त हो जाती है। इस उपन्यास में स्त्री जीवन के संघर्ष को दिखाया गया है, एक स्त्री के जीवन में कितनी बुरी परिस्थितियाँ आती हैं। अकेली रहने वाली नायिका अपने अकेले जीवन का आम आवामों का चिंतन करती है। एक महिला जब किसी जगह काम करती तो उसे कई विसंगतियों का सामना करना पड़ता है, उसका चिंतन करना पड़ता है। उसे सुबह दस से पाँच काम के प्रति समर्पित होना पड़ता है। इस प्रकार यह उपन्यास नौकरीपेशा अविवाहित नारी विभिन्न असुरक्षितताओं को नये आयाम में प्रस्तुत कर उसकी विभिन्न मनोदशाओं का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है।

3 **दौड़ः** सन् 2000 में प्रकाशित ममता जी का यह छठा उपन्यास है। कुल 95 पृष्ठों में लिखा गया यह उपन्यास इक्कीसवीं सदी के आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद के जीवनगत परिणामों का यथार्थ संकलन है। ममता जी का यह 'दौड़' उपन्यास भूमण्डलीकरण, व्यवसायिकता, आजीविकावाद, विज्ञापनबाजी, उपभोक्तावाद आदि के मिश्रण से बने मनुष्य की कहानी बहुत प्रभावित ढ़ग से प्रस्तुत करता है। बेशक दस दौर में 'दौड़' ने नव धनाढ्य वर्ग की नई पीढ़ी के चरित्र के माध्यम से हिन्दी कथा साहित्य के एक प्रतिमान कायम किया है।

4 **प्रेम कहानीः** सन् 1980 में प्रकाशित ममता कालिया का यह तीसरा उपन्यास है। उपन्यास का प्रारंभ कथा नायिका का पारिवारिक समस्याओं से होता है। शिक्षा में अधिक रुचि रखने वाली नायिका अपने पिता के तबादले के साथ दिल्ली से मथुरा रवाना हो जाती है। वह पढ़ने बाहर जाती है उसे हॉस्टल में रहने की अनुमति नहीं रहती तो उसे चाचा के घर रख दिया जाता है, जिनके छोटे छोटे बच्चे होते हैं जिसकी वजह से वह पढ़ाई नहीं हो पाती, इसलिए वो लाइब्रेरियो में अपना नाम दर्ज करा लेती है और ज्यादा समय घर से बिताती थी। उसकी पढ़ाई के समय उसकी मुलाकात गिनेस से होती जिसको उससे प्रेम होता है और वह उससे प्रेम विवाह करती है। डॉ. गुप्ता के अस्पताल के सामने गिनेस को एक क्वार्टर मिल जाता है। गिनेस के पास मरीजों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। डॉ गुप्ता मरीजों की संख्या देखकर भ्रष्ट हो जातें हैं और पैसों के लिए राजनीति फैलाते हैं। गिनेस उतनी ही लगन से मरीज की सेवा करता है। गिनेस की लगन उसके परिवार में दरार पैदा कर देती है। वह अस्पताल उसके परिवार को तोड़ देता है। इस प्रकार ममता जी ने इस उपन्यास में प्रेम के सफल और असफल दोनों रुपों को केन्द्र में रखकर नारी जीवन की कोमलतम् भावनाओं के संघर्ष का यथार्थ वर्णन किया है। प्रेम विवाह की सफलता–असफलता का चित्रण किया है। 21वीं सदी में महिलाओं एवं समाज के विकास को तीव्र करने में नारी चेतना सहायक सिद्ध हुई है। नारी ईश्वर की अनुपम कृति है।

निष्कर्ष

ममता कालिया ने उपन्यास और कहानियों के अलावा साहित्य की अन्य विधाओं का भी सृजन करने में सफलता पायी है। ममता जी ने लगभग हर रचना में अपने समय और समाज को पुनः परिभाषित करने का

सृजनात्मक जोखिम उठाया है। कभी वे समूचे परिवेश में नया सरोकार ढूँढ़ती हैं तो कभी वे वर्तमान परिवेश में नयी अस्मिता और संघर्ष को शब्द देती है। कुल मिलाकर साहित्य जगत में अन्य साहित्यकारों की तरह ममता जी का नाम भी सबसे अग्रण्य है।

संदर्भ सूची

1. कालिया, ममता, *''बेघर''*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण 2002।
2. कालिया, ममता, *''लड़कियाँ''*, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1987
3. आशारानी, *''भारतीय नारी– दशा, दिशा''*, नेशनल पब्लिसिंग, दरियागंज, नई दिल्ली व्होरा, पृ,सं, 18।
4. कालिया, ममता, *''एक पत्नि के नोट्स''*, किताब घर प्रकाशन, 1997, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली –110002।
5. धर्मपाल, *''नारी एक विवेचन''*, भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1996, पृ,सं 5।
6. कालिया, ममता, *''दौड़''*, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण, नई दिल्ली 110002।

****